मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी.शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अजय कुमार[*] एवं डॉ॰ भूपेंद्र कौर[**]

[*] शोद्यार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद (उ0प्र0)

[**] सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद (उ0प्र0)

सारांश

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा ही मानव की अभिव्यक्ति, समायोजन की क्षमता एवं व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होती है। वर्तमान में शिक्षकों के रूप में नियुक्ति पाने वाले उच्च योग्यता धारी व्यक्तियों का अवसर मिलते ही नौकरी को छोड़ जाने की प्रवृत्ति दृष्टिगत हो रही है। इसकी पृष्ठभूमि में मुख्य रूप से दो कारण हो सकते हैं–व्यवसाय से असंतुष्टि तथा सामाजिक प्रतिष्ठा। उच्च योग्यताधारी शिक्षक फलतः अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट हो अथवा निम्न वेतन पाने के कारण असन्तोष की भावना जागृत हो गयी हो। यह भी हो सकता है कि कुछ लोग उच्च प्राथमिक शिक्षक के रूप में कार्य करके अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्युनता का अनुभव करते हो। उच्च प्राथमिक शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों एवं अनुदेशकों की कार्य सन्तुष्टि के अध्ययन की आवश्यकता है। जिससे उनकी असन्तुष्टि के कारणों को जानकर उनको दूर करने का प्रयास किया जाये जिससे उच्च प्राथमिक स्तर को उन्नत किया जा सके। प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शोधकर्ती के संज्ञान में यह तथ्य आया कि परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित काफी शोधकार्य शिक्षा के विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च स्तर) पर सम्पन्न किया गया है। इनमें कार्य सन्तुष्टि पर विभिन्न भौतिक शारीरिक मानसिक, वातावरणीय व मनौवैज्ञानिक कारकों के प्रभावों का अन्वेषण भी किया गया। वस्तुतः कार्य सन्तुष्टि व्यक्ति विशेष की उस मनोवृत्ति को प्रदर्शित करती है जो किसी कार्य विशेष के सम्पादन के फलस्वरूप अभिव्यक्त होती है और प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से उस कार्य के परिणाम को प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनायें प्रस्तुत के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये है–मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

संकेत शब्द :– *प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, शैक्षिक समस्याएं ।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा ही सशक्त साधन के रूप में जीवन में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा हमारे राष्ट्र के विकास के लिए मुख्य आधार मानी जाती है, क्योंकि राष्ट्र की प्रगति राष्ट के शिक्षित लोगों पर निर्भर करती है। यदि लोग शिक्षित होंगे तो राष्ट्र का निश्चित रूप से विकास होगा। शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा ही मानव की अभिव्यक्ति, समायोजन की क्षमता एवं व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होती है। अन्तर्राष्ट्रीय विकास आयोग

की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा मनुष्य का मौलिक एवं संवैधानिक अधिकार है। लेकिन उच्च शिक्षा राष्ट्र के विकास व प्रगति का आधार मानी गयी है। हमारी केन्द्रीय व राज्य सरकार सबसे अधिक प्राथमिकता प्राथमिक शिक्षा पर दे रही है। केन्द्र सरकार ने शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल करके शिक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व राज्य सरकारों को दे दिया है। लेकिन राज्य सरकारें वित्तीय संसाधनों की कमी व संकट के कारण उच्च शिक्षा को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करने में असमर्थ है। यह जीवन पर्यन्त गतिमान विकास की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती है। यह मात्र पढ़ना तथा पढ़ाना ही नहीं सिखाती है अपितु व्यक्तित्व का समग्र रूप में स्वाभाविक, सामजस्यपूर्ण व प्रगतिशील विकास कर व्यक्ति को राष्ट्र व समाज के लिए उपयोगी बनाती है। समय तो अपनी गति से चलता है, दिन बदलते है, साल गुजरते हैं और सदियां इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाती हैं। बींसवी सदी भी अब इतिहास बन चुकी है और इक्कीसवी सदी शुरु हो गयी है ऐसे अवसर पर थोड़ा गम्भीरता से आत्मावलोकरन करना और विकास की गति व उसके विभिन्न आयामों पर एक समालोचक दृष्टि डालना आवश्यक लगता हैं अपने दैनिक और राष्ट्रीय जीवन में बहुत से ऐसे पहलू और क्षेत्र हैं जिनसे हमने प्रगति की है, कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जिनमें हमारा प्रदर्शन सामान्य रहा और कुछ क्षेत्रों में हमने निराशाजनक प्रदर्शन किया है। यह दुर्भाग्य ही है कि ऊपरी हिस्से में सुधार की कोशिश तो रही है, लेकिन असल समस्या को सुधारने की पहल कहीं से नहीं हो रही। यह बात दीगर है कि एक समय था, जब सरकारी शिक्षण संस्थाओं से निकले विद्यार्थी ही देश के शीर्ष पदों पर पहुंचते थे। कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों ने सीमित संसाधनों में उनकी प्रतिभ का विकास किया था। लेकिन आज की परिस्थितियों में यह बेहद दुष्कर है और ऐसे में मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा का नया क्षितिज उसकी पहुंच से दूर होना स्वाभाविक है। सरकार को शिक्षा में समानता की जिम्मेदारी निभानी चाहिए थी, लेकिन हो इसके विपरीत रहा है। कहीं आरक्षण का खेल तो कहीं शिक्षा का व्यापारीकरण को प्रोत्साहन, आखिर सरकार शिक्षा को किस दिशा में ले जाना चाहती है? यदि नहीं, तो फिर शिक्षा में समरूपता के लिए कड़े कानून क्यों नहीं बनते? यह बात सही है कि बढ़ती छात्र संख्या के अनुपात में सरकार संसाधनों के विकास में विफल रही । ऐसे में निजी शिक्षण–संस्थाओं को फलने –फूलने का अवसर मिला। इसके शिक्षा की जरूरतें तो पूरी हुई हैं। साथ ही विद्यार्थियों को भी संभावनाओं के नये अवसर मिले। लेकिन चिंताजनक यह है कि इस क्षेत्र में ज्यादातर शैक्षिक संस्थायें व्यापारिक मानसिकता से आयीं। उन्होंने यहां भी लाभ–लागत का व्यापारिक दृष्टिकोण अपनाया। आज के मनोवैज्ञानिक युग में अध्यापक की अभियोग्यता तथा आत्म संप्रत्यय को जानना आवश्यक है। क्योंकि शिक्षक की शिक्षण अभियोग्यता तथा आत्म–सम्प्रत्य का स्पष्ट प्रभाव बालक एवं उसकी सम्प्राप्तियों पर पड़ता है तथा साथ–साथ समाज भी शिक्षक से आज यह अपेक्षा करता है कि उसका चरित्र आदर्श हो, वह उच्च शिक्षण अभियोग्यता रखता हो, वह सन्तोषी हो तथा उसके चरित्र में ऋषियों की सादगी हो, वह ज्ञान व सत्य का उसी प्रकार संधान करे जैसे प्राचीन ऋषि करते थे। अध्यापको की शिक्षण अभियोग्यता व आत्म संप्रत्यय के अध्ययन के साथ कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जाये और जिन शिक्षकों का इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। उनको ही इस कार्य हेतू नामांकित किया जाये तथा जो अध्यापक पथ भ्रमित है उन्हें उपचारात्मक प्रशिक्षण दिया जाये जिससे वह अपना शत–प्रतिशत योगदान शिक्षा के विकास में दे सके।

आवश्यकता एवं महत्व :–

आज शिक्षा में मात्रात्मक ही नहीं बल्कि गुणात्मक सुधार पर अधिक जोर दिया जा रहा है। लेकिन आजकल हम देखते हैं कि विद्यालयों में पढ़ाई का वातावरण नहीं हैं शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरु का सदैव महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में छात्र गुरु–गृहों में जाकर विधार्जन किया करते थे चाहे वैदिक काल हो, जैन धर्म, बौद्ध धर्म काल हो या फिर मुस्लिम काल। शिक्षक प्रत्येक काल में सम्मान जनक स्थान पर

प्रतिष्ठित रहे है। समय चक्र की गति के साथ–साथ शिक्षा की सामाजिक मान्यताओं व अपेक्षाओं में व्यापक परिवर्तन हुयें हैं। यदि सिक्के का दूसरा पहलू देखे तो हम पाते हैं कि औद्योगीकरण व वैश्वीकरण के रंग में रंगते जा रहे इस भौतिकवादी समाज में सम्मान जनक जीवनयापन हेतु शिक्षकों के दृष्टिकोण में बदलाव अप्रत्याशित नहीं है। इस स्थिति के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी स्वयं समाज ही है। समाज में भौतिकतावादी वृत्ति पनपते रहने का दुष्परिणाम यह है कि केवल धनोपार्जन को श्रेष्ठता मिल गयी है। अन्य विकासशील व विकसित देशों में शिक्षकों के वेतनमान व पदोन्नति के अवसर अन्य व्यवसायों की तुलना में वेहतर है। असन्तुष्ट शिक्षक केवल अधकचरे ज्ञान से सरावोर विद्यार्थी ही उत्पन्न कर पायेगा जो राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जायेंगे। असन्तुष्ट शिक्षकों से छात्रों में मूल्यों, रूचियों, अभिवृत्तियों, आदतों एवं वैयक्तिक सामंजस्यशीलता के सृजन एवं विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षकों के रूप में नियुक्ति पाने वाले उच्च योग्यता धारी व्यक्तियों का अवसर मिलते ही प्राथमिक स्तर को छोड़ जाने की प्रवृत्ति दृष्टिगत हो रही है। इसकी पृष्ठभूमि में मुख्य रूप से दो कारण हो सकते हैं– व्यवसाय से असंतुष्टि तथा सामाजिक प्रतिष्ठा। उच्च योग्यताधारी शिक्षक फलतः अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट हो अथवा निम्न वेतन पाने के कारण असन्तोष की भावना जागृत हो गयी हो। यह भी हो सकता है कि कुछ लोग उच्च प्राथमिक शिक्षक के रूप में कार्य करके अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्युनता का अनुभव करते हो। उच्च प्राथमिक शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों एवं अनुदेशकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि के अध्ययन की आवश्यकता है। जिससे उनकी असन्तुष्टि के कारणों को जानकर उनको दूर करने का प्रयास किया जाये जिससे उच्च प्राथमिक स्तर को उन्नत किया जा सके। प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शोधकर्ती के संज्ञान में यह तथ्य आया कि परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित काफी शोधकार्य शिक्षा के विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च स्तर) पर सम्पन्न किया गया है। इनमें कार्य सन्तुष्टि पर विभिन्न भौतिक शारीरिक मानसिक, वातावरणीय व मनौवैज्ञानिक कारकों के प्रभावों का अन्वेषण भी किया गया।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन :–

निम्नलिखिंत विद्यार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें **मेहरा, विमला एवं सक्सेना अलका (2012), सिंह, राजेश कुमार (2014), सिंह, कुमुदिनी (2016), चौधरी, एस0 (2017), अशहर तौसीफ (2015), सैफी, एम0 (2018) और रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2019)** आदि प्रमुख है।

समस्या कथन :–

"मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

बी.टी.सी. शिक्षक :– बी॰टी॰सी॰ धारी शिक्षकों से आशय उन शिक्षको से हैं जिन्होने स्नातक के बाद दो बर्षीय बी॰टी॰सी॰ की डिग्री प्राप्त की है।

विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक :– विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ धारी शिक्षकों से आशय उन शिक्षको से हैं जिन्होने स्नातक या परास्नातक के बाद एक वर्षीय बी॰एड॰ की डिग्री प्राप्त की है।

कार्य सन्तुष्टिः– कार्य सन्तुष्टि व्यक्ति की अपनी मनोवैज्ञानिक, पर्यावरणीय, सामाजिक तथा भौतिक परिस्थितियों के प्रति सकरात्मक अनुभव है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को ज्ञात करना।

2. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को ज्ञात करना।
3. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को ज्ञात करना।
4. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण :–

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श :–

वर्तमान लघु शोध हेतु 80 शिक्षकों (40 पुरूष शिक्षक एवं 40 महिला शिक्षक) को शामिल किया गया है।

उपकरण :–

शोध उपकरण–"डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मापने हेतु मापनी (DJSS)**

तालिका – 1.1

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	158.25	13.55	3.56
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	161.36	16.86	

उपयुक्त सारणी 1.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 158.25 एवं 13. 55 प्राप्त हुआ एवं मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 161.36 एवं 16.86 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 3.56 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से अधिक होती है। अतः स्पष्ट होता है बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः परिकल्पना प्रथम स्वीकार की जाती है।

तालिका – 1.2

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	162.42	15.86	4.10
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	171.35	18.38	

उपयुक्त सारणी 1.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 162.42 एवं 15. 86 प्राप्त हुआ एवं मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 171.35 एवं 18.38 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 4.10 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से अधिक होती है। अतः स्पष्ट होता है बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः परिकल्पना द्वितीय स्वीकार की जाती है।

तालिका – 1.3

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	170.23	18.64	4.86
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	185.38	21.86	

उपयुक्त सारणी 1.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 170.23 एवं 18. 64 प्राप्त हुआ एवं मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 185.38 एवं 21.86 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 4.86 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से अधिक होती है। अतः स्पष्ट होता है बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः परिकल्पना तृतीय स्वीकार की जाती है।

तालिका – 1.4

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शहरी शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	163.46	12.72	3.56

विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	168.88	14.82	

उपयुक्त सारणी 1.4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 163.46 एवं 12. 72 प्राप्त हुआ एवं मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 168.88 एवं 14.82 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 3.56 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से अधिक होती है। अतः स्पष्ट होता है बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः परिकल्पना चतुर्थ स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

अली एस0एम0 एस0 (2004). *मदरसे व सरस्वती शिशु मन्दिरों के अध्यापकों के मूल्यों व कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन.* एम0एड0 लघुशोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

सिंह आर0पी0 (2001). *सरकारी प्राथमिक विद्यालय तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्य व कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन,* एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

खण्डेवाल अनीता (1998). *बरेली जनपद के प्राथमिक जुनियर हाईस्कूल एवं माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन* एम0एड0 लघु शोध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

द्विवेदी एस0के0 (2004). *बरेली शहर में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन* एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

राठौर ए0के0 (2007). *रामपुर जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन* एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ।

****